शहर में बंगाली समाज ने 'पोएला बैसाख' के साथ खुशियां बांटी, बंगाली क्लब में कार्यक्रम, सुबह प्रभात फेरी निकली

पोएला बैसाख पर जीवंत हो उठी बंगाली संस्कृति

बांग्ला वर्ष

लखनऊ | निज संवाददाता

बंगाल की संस्कृति और परम्परा के साथ ही लोकगीतों की बयार रविवार को लखनऊ में बही। बंगाली समुदाय की ओर से बंगाली नववर्ष 'पोएला बैसाख' का जश्न शहर में समुदाय के लोगों ने धूमधाम से मनाया। नये कपड़े, स्वादिष्ट पकवान और संगीत के साथ पोएला बैसाख की यादें लोगों ने दिल में बटोरी।

सुबह पहले रवीन्द्रपल्ली में बंगाली समुदाय के लोगों ने एक दूसरे को गले मिलकर और फूल देकर नये साल की मुबारकबाद दी तो वहीं शाम को बंगाली क्लब में लोगों का जुटना शुरू हुआ। जहां लोक संगीत की महफिल देर तक चली और स्वादिष्ट पकवानों के साथ शाम गुलजार रही। बंगाली क्लब में माहौल एक दूसरे को खुशी और सम्मान देने वाला था। बंगाली समुदाय अपने नवे वर्ष का आगाज बड़ों से आशीर्वाद लेने के साथ शुरू करते हैं। बंगाली क्लब में मशहूर बांग्ला बैंड माहुल ने शाम को अपने लोकगीतों के साथ सजावा।

प्रभात फेरी में जुटा समुदाय : बंगाली नववर्ष के मौके पर सुबह भोर में समुदाय के लोग एकत्र हुए और एक दूसरे को

बंगाली नववर्ष 'पोएला बैसाख' का जश्न शहर में समुदाय के लोगों ने धूमधाम से मनाया। बंगाली क्लब में मशहूर बांग्ला बैंड माहुल ने अपने लोकगीतों से शाम सजाई। • हिन्दुस्तान

निकाली। एक दूसरे से घरों में मिलने के बाद सभी लोग रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा के पास एकत्रित हुए और रवीन्द्र संगीत की प्रस्तुति के साथ दीपदान भी किया। प्रभात फेरी में मुख्य रूप से नीलाक्षी, विकास, आरएन बोस, आलोक मित्रा, दीपक हलदार व पीके दत्ता के साथ समुदाय के अन्य लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर सभी ने लोकगीतों से फेस्टिवल में बिखरी चमक बंगाली की संस्कृति गीत और संगीत में बसती है।

ऐसा ही नजारा बंगाली क्लब में देखने को मिला। जहां माहुल बैंड ने अपने गीत और संगीत से सभी को अपने साथ झूमने का मौका दिया। लोकगीतों के लिए मशहूर माहुल बैंड ने बांग्ला लोकगीत 'मरांग बुरु तुरु रू रू' को पेश पेश अपनी श्रोताओं की वाहवाही अर्जित की। माहुल बैंड भारत के साथ ही विदेशो में भी अपने खास गीतों के लिए पसंद किया जाता है।

बैंड में गायक पार्थ भौमिक एवं शैनाई सेन ने कई मधुर गीतों को पेश किया। गायकों के साथ ढोलक पर शुभजीत दास, बांसुरी और बैंजो पर सोहम, की बोर्ड पर सुमन दास ने अपना हुनर

स्वादिष्ट पकवानों से महके घर

पोएला बैसाख मतलब बैसाख की पहली तारिख जिसे बंगाली समुदाय नये साल के रूप में मनाता है। रविवार को शहर में मौजूद सभी बंगाली परिवारों के घरों में स्वादिष्ट पकवानों की महक आती रही। बंगाली पकवानों में लोगों ने मुख्य रूप से काजू किशमिश से बनने वाली बंगाल की मशहूर मिठाई खोया बूंदी को बनाया। इसके साथ ही मालपुहा, पानतुआ (कालाजाम), सौंदिश, चमचम, करेला, आलू, कच्चा केला से तैयार 'सुक्तो', आलू भाजा, माछेर झाल, मिष्टी दोई,पौटोल भाजा,चाटनी जैसे पारम्परिक व्यंजनों के साथ नये साल का उत्सव मनाया गया।